इरफ़ाने

इलाही

इरफ़ाने

इलाही

irfān-e-ilāhī

Knowing God

by W. Miller
(Urdu—Hindi script)

© 2019 MIK
published and printed by
Good Word, New Delhi

for enquiries or to request more copies:
askandanswer786@gmail.com

आप दुनिया में कहीं भी जाएँ तो किसी न किसी देवता या ख़ुदा के घर देखेंगे। इसकी क्या वजह है? इनसान फ़ितरतन मज़हबी होते हैं। हर जगह वह किसी न किसी हस्ती की परस्तिश करते हैं, जिसे वह अपनी ज़बान में "ख़ुदा" के नाम से पुकारते हैं।

बुत से ख़ुदा का इज़हार?

जब लोगों से पूछा जाए कि ख़ुदा कैसा है तो वह मुख़तलिफ़ जवाब देंगे। क्यों? इसलिए कि ख़ुदा को किसी ने कभी नहीं देखा। हर इनसान की ख़ुदा के बारे में मुख़तलिफ़ सोच होती है। तौरेत शरीफ़ में मरक़ूम है कि जब हज़रत मूसा ख़ुदाए-बर-हक़ के हुज़ूर सीना पहाड़ पर गए तो इसराईलियों ने सोने का बछड़ा बनाकर उसकी परस्तिश की और कहा, "यह हमारा ख़ुदा है।" उनका ख़याल था

कि अल्लाह तआला एक बछड़े की मानिंद है। बाज़ बुतपरस्तों का ख़याल है कि वह साँप की मानिंद है।

एक दफ़ा जब मैं मलेशिया के किसी मंदिर में गया तो क्या देखता हूँ कि एक औरत अपने बच्चे के साथ एक डरावनी शक्ल के बत की परस्तिश कर रही है। उनका ख़याल था कि यह ख़ुदा है। क़दीम ज़माने में यूनानी और रोमी बाशिंदे मर्दों और औरतों के ख़ूबसूरत बुत बनाते थे जो उनके देवताओं को ज़ाहिर करते थे।

ज़हन के बुत

दूसरी तरफ़ बहुत-से लोग इसरार करते हैं कि यह मुमकिन ही नहीं कि इनसान अपने हाथों से ख़ालिक़ो-मालिक की शक्ल बना सके। लेकिन गो यह लोग अपने हाथों से बुत नहीं बनाते लेकिन अपने ज़हनों में वह ज़रूर हक़ तआला के बुत खड़े कर लेते हैं।

बाज़ का ख़याल है कि अल्लाह तआला घड़ीसाज़ की मानिंद है जो घड़ी बनाकर उसे उसके हाल पर छोड़ देता है। वह कहते हैं कि अल्लाह ने इसी तरह दुनिया को ख़लक़ किया। उस वक़्त से यह अपनी क़ुव्वत और दस्तूरुल-अमल के मुताबिक़ चल रही है। अब ख़ुदा इस में मुदाख़लत नहीं करता।

बाज़ का ख़याल है कि जैसे इनसान के अंदर रूह है उसी तरह अल्लाह मादी काइनात में बसता है और उसकी गोया रूह है।

औरों का ख़याल है कि चूँकि ख़ुदा एक ऐसी हस्ती है जो इनसान से बिलकुल मुख़तलिफ़ और उसके वहमो-गुमान से बुलंदो-बाला है इसलिए उसे जानना मुमकिन ही नहीं।

ख़ुदा के बारे में कोई इत्तफ़ाक़ नहीं

ग़रज़ अगरचे बेशतर लोग किसी न किसी तरह के ख़ुदा पर ईमान तो रखते हैं, तो भी वह मुत्तफ़िक़ नहीं कि वह कैसा है।

लाज़िम है कि ख़ुदा अपने आपका इज़हार करे

इनसान अपनी कोशिश से अल्लाह तआला की सहीह पहचान तक कभी नहीं पहुँच सका। आइंदा भी वह उसे कभी नहीं जान सकेगा जब तक कि ख़ुदा किसी न किसी तरह से उस पर अपना इनकिशाफ़ न करे। लेकिन क्या ख़ुदा अपने आपको इनसान पर ज़ाहिर करना चाहता है? क्या उसकी मरज़ी है कि इनसान उसे हक़ीक़ी तौर पर जानें? ज़रूर।

अल्लाह ने इनसान को पैदा करके उस में ख़ुदा को जानने और उसकी परस्तिश करने की आरज़ू डाली है। यक़ीनन वह चाहता है कि इनसान उसे जाने। यक़ीनन उसने किसी न किसी तरह अपने आपको उस पर ज़ाहिर किया है। लेकिन उसने अपने आपको किस तरह ज़ाहिर किया?

बढ़ई की मिसाल

फ़रज़ करें कि एक माहिर बढ़ई दूर-दराज़ मुल्क में रहता है। हमने उसे कभी नहीं देखा। अगर वह चाहे कि हम उसे जानें तो वह क्या करेगा?

अपने कामों से अपने आपका इज़हार

हो सकता है कि सबसे पहले वह एक ख़ूबसूरत मेज़ बनाकर हमें भेज दे। जो भी उस मेज़ को देखेगा पुकार उठेगा, “वाह जी वाह! जिसने यह ज़बरदस्त मेज़ बनाई है हम उसके नाम और नसल से नावाक़िफ़ हैं। लेकिन उसकी कारीगरी से हम अंदाज़ा लगा सकते हैं कि वह अपने फ़न में निहायत माहिर है। हम यह भी जान सकते हैं कि वह ख़ूबसूरती को पसंद करता है, क्योंकि उसने मेज़ को

निहायत ख़ूबसूरत बनाया है। बेशक वह फ़रनीचर बनाने के उसूलों से ख़ूब वाक़िफ़ है।" ग़रज़, दस्तकार की दस्तकारी से हम उसके बारे में थोड़ा बहुत जान लेते हैं।

क्या अल्लाह ने इस तरीक़े से अपने आपको इनसान पर ज़ाहिर किया है? ज़रूर! अल्लाह तआला की क़ुदरत और दानाई चारों तरफ़ नज़र आती हैं। सायंस रोज़ बरोज़ इसकी तसदीक़ करता है कि काइनात कितनी क़ुदरत और दानाई से बनाई गई है। हज़रत दाऊद भी फ़रमाते हैं,

> आसमान अल्लाह के जलाल का एलान करते हैं, आसमानी गुम्बद उसके हाथों का काम बयान करता है। (ज़बूर शरीफ़ 19:1)

चूँकि काइनात इतनी ख़ूबसूरत है तो इसका ख़ालिक़ कितना ख़ूबसूरत होगा! काइनात पर ग़ौर करने से हर सोचनेवाला इस नतीजे पर पहुँच सकता है कि ख़ुदा है और कि वह अज़ीम, हकीम और क़ादिर है। ताहम क़ादिरे-मुतलक़ के मुताल्लिक़ बहुत-सी बातें हैं जो काइनात बताने से क़ासिर है।

दोस्तों से अपने आपका इज़हार

अगर बढ़ई चाहे कि हमें उसके बारे में मज़ीद मालूम हो जाए तो हो सकता है कि वह हमारे पास अपने किसी दोस्त को भेजे। वह दोस्त हमें बढ़ई के मुताल्लिक़ ज़बानी बहुत-सी बातें बता सकता है। मसलन कि वह कहाँ रहता है, उसकी कितनी उम्र है, उसका ख़ानदान कितना बड़ा है, उसका किरदार कैसा है वग़ैरा। इस तरह हम पहले तरीक़े की निसबत बहुत ज़्यादा मालूमात हासिल कर सकते हैं।

क्या अल्लाह तआला ने कभी अपने किसी दोस्त को हमारे पास भेजा है कि हमको उसके मुताल्लिक़ बताए? ज़रूर। उसका नाम हज़रत इब्राहीम है जिसे ख़लीलु-ल्लाह यानी "ख़ुदा का दोस्त" कहकर याद किया जाता है। इसके अलावा उसने अपने दीगर दोस्त भी भेजे ताकि दुनिया को उसके बारे में बताएँ। इन पैग़ंबरों ने बताया कि ख़ुदा एक है, कि वह पाको-क़ुद्दूस है। वह सच्चाई और नेकी को पसंद करता है जब कि उसकी झूट और बदी से सख़्त नफ़रत है। वह इनसान की फ़िकर करता है। उसकी यह ख़्वाहिश है कि इनसान उसे जाने और प्यार करे।

ख़ुदा के इन दोस्तों की मारिफ़त हम काइनात की निसबत बहुत ज़्यादा मालूमात हासिल कर सकते हैं। लेकिन यह मालूमात दूसरों

के वसीले से हैं। इस में हमारा अल्लाह तआला से राबिता बराहे-रास्त नहीं हुआ।

ख़त लिखने से अपने आपका इज़हार

बढ़ई एक और तरीक़े से अपने बारे में मालूमात हम तक पहुँचा सकता है : वह हमें ख़त लिख सकता है। शायद उसका ख़त यों हो, "मेरे अज़ीज़ दोस्तो, मैंने सुना है कि जो मेज़ मैंने आपके लिए बनाई है वह आपको पसंद है। आपने मेरे दोस्तों के सामने मेरी तारीफ़ की है। मैं आपका दोस्त बनना और आपसे क़रीबी रिश्ता क़ायम करना चाहता हूँ। मैं आपकी हर तरह से मदद करना चाहता हूँ। किसी न किसी दिन मैं ज़रूर आपसे मुलाक़ात करूँगा।"

ऐसे मुहब्बत-भरे ख़त से ज़ाहिर हो जाएगा कि बढ़ई के दोस्तों ने उसके मुताल्लिक़ जो कुछ बताया था वह बिलकुल दुरुस्तो-रास्त है। इस तरीक़े से हमारा बढ़ई से शख़्सी राबिता क़ायम हो जाएगा, और हम उसकी मुलाक़ात के पहले की निसबत ज़्यादा मुश्ताक़ होंगे।

क्या अल्लाह तआला ने इनसान को कोई ख़त लिखा है? ज़रूर। जिन किताबों को हम "आसमानी किताबें" कहते हैं वह ख़ुदावंद की तरफ़ से इनसान के नाम ख़ुतूत हैं। इन तहरीरों में ख़ुदावंद

हमें बताता है कि वह कौन है और इनसान की तख़लीक़ का क्या मक़सद है। वह फ़रमाता है कि मैंने इनसान को इस ग़रज़ से पैदा किया कि वह मेरी मानिंद हो और मेरा अज़ीज़ फ़रज़ंद बने। अगरचे इनसान नाफ़रमानी करके अपने ख़ालिक़ को भूल गया है, फिर भी मैं उसे प्यार करता हूँ। फिर भी मेरी ख़्वाहिश है कि उसे उस गुनाह से नजात बख़्शूँ जिसके बाइस वह अपने ख़ालिक़ से दूर हो गया है। मैं इनसान को उसके आसमानी बाप से अज़ सरे-नौ मिला देना चाहता हूँ। इन पैग़ामात के बारे में हज़रत दाऊद फ़रमाते हैं,

> तेरा कलाम मेरे पाँव के लिए चराग़ है जो मेरी राह को रौशन करता है। (ज़बूर शरीफ़ 119:105)

इन तहरीरों के वसीले से क़दीम ज़माने के बहुत-से लोगों ने ख़ुदावंद की पहचान हासिल की है।

मुलाक़ात से अपने आपका इज़हार

अगर बढ़ई चाहता हो कि हम उससे वाक़िफ़ होकर उसके सच्चे दोस्त बनें तो वह और कौन-सा तरीक़ा इख़्तियार कर सकता है? वह ख़ुद हमसे मुलाक़ात कर सकता है। फ़रज़ करें कि एक दिन वह आपके पास आकर यह कहे, “मैं कुछ मुद्दत आपके हाँ मेहमान रहना चाहता हूँ। मैं आपके कारोबार में आपका हाथ बटाऊँगा और

आपकी ख़ुशी और ग़मी में आपका शरीक हूँगा।" अब हम बढ़ई को हक़ीक़ी तौर पर जानने लगेंगे। अब उसके साथ हमारी दोस्ती मज़बूतो-मुस्तहकम हो जाएगी। क्योंकि हमने उसे रूबरू देखा है।

इसी तरह अगर अल्लाह तआला अपने आपको हम पर कामिल तौर पर ज़ाहिर करना चाहे तो वह क्या करेगा? क्या वह बज़ाते-ख़ुद हमारी मुलाक़ात करने और हमारे दरमियान रहने न आएगा?

ख़ुदाए-ज़ुलजलाल ने काइनात में अपनी कारीगरी ज़ाहिर कर दी। उसने अपने नबियों को भेजा और हमारे हाथों में अपने मुक़द्दस सहायफ़ देकर अपने आपको हम पर कुछ हद तक ज़ाहिर किया है। ताहम हम दिल की गहराइयों से उसके हुज़ूर आना चाहते हैं। हम उसे देखना चाहते हैं, उसकी आवाज़ सुनना चाहते हैं। हमारी आरज़ू है कि वह हमारी दुनिया में आकर हमारे दरमियान रहे। क्योंकि तब ही हम उसे पूरे तौर पर जान सकेंगे।

लेकिन क्या ऐसी सूरत मुमकिन है? क्या हक़ तआला ज़मीन पर गुनाहगार इनसानों के दरमियान सुकूनत कर सकता है? क़ादिरे-मुतलक़ के लिए कुछ भी नामुमकिन नहीं होता। अगर वह अपने आपको इनसान पर ज़ाहिर करना चाहे तो वह कर सकता है। उसकी राह में कोई रुकावट हाइल नहीं हो सकती। अगर हम यह कहें कि अल्लाह ऐसा नहीं कर सकता तो हम उसकी क़ुदरत से इनकार करते हैं। यह तो कुफ़र के बराबर है। अगर ख़ुदावंद चाहे

तो वह अर्श से फ़र्श पर आकर इनसानों के दरमियान रह सकता है ताकि हम उसे अच्छी तरह जान सकें।

अल-मसीह में अल्लाह का इज़हार

अब सवाल यह है कि क्या अल्लाह तआला हमसे मुलाक़ात करना चाहता है? ख़ुशख़बरी यह है कि चूँकि अल्लाह चाहता है कि हम उसे जानें और उसे दिलो-जान से प्यार करें इसलिए उसने हम पर रहम करके हमारे दरमियान सुकूनत किया। दो हज़ार साल गुज़रे हैं कि अल्लाह ने अपने नूर को जो कि उसके साथ एक है इस दुनिया में भेजा। वही ख़ुदा का नूर जो कलिमतु-ल्लाह भी कहलाता है इनसान बनकर ज़मीन पर आया।

हुज़ूर अल-मसीह अनोखे थे। उनकी फ़ितरत दो तरह की थी यानी इनसानी और इलाही। वह हक़ीक़ी इनसान थे, क्योंकि वह सदीक़ा मरियम से पैदा हुए थे। गुनाह के सिवा उन में तमाम इनसानी सिफ़ात मौजूद थीं। लेकिन वह इनसानों से कहीं बाला भी थे, क्योंकि उन में इलाही सिफ़ात भी पाई जाती थीं। लिहाज़ा जब हुज़ूर अल-मसीह दुनिया में आए तो हक़ीक़त में ख़ुदा ख़ुद इनसानों के दरमियान आया। यह बात उनके लक़ब "इम्मानुएल" से ज़ाहिर है जिसका मतलब है "ख़ुदा हमारे साथ।"

"इम्मानुएल" के अलावा हुज़ूर अल-मसीह के कई दीगर आला लक़ब और ख़ूबसूरत नाम भी हैं। लेकिन ख़ासुल-ख़ास लक़ब जो अल्लाह ने उन्हें दिया वह "इब्ने-ख़ुदा" है। अल-मसीह ने अपने आपको बाज़ औक़ात "इब्ने-आदम" कहा और बाज़ औक़ात "इब्ने-ख़ुदा।" आम तौर पर वह ख़ुदा को अपना बाप कहते थे। एक दफ़ा जब वह अपने शागिर्दों से अपने बाप यानी ख़ुदा के बारे में बातचीत कर रहे थे तो उन में से एक ने उनसे कहा, "बाप को हमें दिखाएँ।" हुज़ूर अल-मसीह ने जवाब दिया,

> मैं इतनी देर से तुम्हारे साथ हूँ, क्या इसके बावुजूद तू मुझे नहीं जानता? जिसने मुझे देखा उसने बाप को देखा है। ...मैं बाप में हूँ और बाप मुझ में है। (इंजीले-मुक़द्दस, यूहन्ना 14:9,11)

इनसान के बनाए हुए बुत अनदेखे ख़ुदा के मज़हर कभी नहीं हो सकते थे। नहीं, लाज़िम था कि अल्लाह अपने आपको ईसा अल-मसीह में ज़ाहिर करे ताकि जो कोई ख़ुदा को देखना चाहे वह उसे अल-मसीह में पाए। यही वजह है कि उन्हें इंजीले-मुक़द्दस में अनदेखे ख़ुदा की सूरत कहा गया है ।[1] ख़ुदा के बेशुमार मुतलाशियों ने इक़रार किया है कि "हमने ख़ुदा को हरगिज़ न जाना जब तक कि हम मसीह ईसा में उसके रूबरू न हुए।" इब्ने-ख़ुदा अपने

[1] इंजीले-मुक़द्दस, कुलुस्सियों 1:15

आसमानी बाप से कामिल तौर पर मुशाबहत रखते हैं, और जो उनको देखता है वह उनके बाप को देखता है।

दीगर अंबिया ने ख़ुदा के बारे में सिर्फ़ ज़िक्र ही किया था, लेकिन हुज़ूर अल-मसीह ने इनसानों पर ख़ुद ख़ुदा को ज़ाहिर किया। वह ख़ुदा का कामिल मज़हर थे। उन में अल्लाह तआला ने अपनी ज़ात का इनकिशाफ़ किया है। कारख़ानाए-फ़ितरत में अल्लाह तआला की कुछ सिफ़ात मसलन दानाई और क़ुदरत वग़ैरा ज़ाहिर हैं। लेकिन हुज़ूर अल-मसीह की ज़ात में हम अल्लाह तआला के ख़यालात, मक़ासिद और काम से ख़ूब वाक़िफ़ होते हैं। इनको किसी दूसरे तरीक़े से जानना मुहाल है। आइए हम इन सिफ़ात में से चंद एक पर ग़ौर करें।

अल-मसीह में अल्लाह की पाकीज़गी और क़ुद्दूसियत का इज़हार

हुज़ूर अल-मसीह की ज़ात में हमें अल्लाह की पाकीज़गी और क़ुद्दूसियत नज़र आती हैं। इसराईल के अंबिया ने लोगों को बताया कि अल्लाह बुतपरस्तों के देवताओं की मानिंद नहीं। वह कामिल तौर पर पाक और क़ुद्दूस है। लेकिन "क़ुद्दूसियत" क्या है? कामिल क़ुद्दूसियत से कोई भी वाक़िफ़ न था। किताबे-मुक़द्दस गवाह है कि

इनसान ने गुनाह किया है और कोई भी बल्कि अंबिया भी कामिल तौर पर पाक नहीं थे। कोई इनसान हत्ता कि हज़रत इब्राहीम और हज़रत मूसा भी हक़ तआला की पाकीज़गी को इनसानों पर ज़ाहिर न कर सके, क्योंकि वह ख़ुद बेगुनाह न थे।

लेकिन जब हुज़ूर अल-मसीह अल्लाह का मज़हर होकर आए तो इनसान ख़ुदा की कामिल क़ुद्दूसियत से वाक़िफ़ हो गए। अब वह जानने के अहल हो गए कि ख़ुदा के पाक होने के क्या मानी हैं। इंजील जलील फ़रमाती है कि अल-मसीह ने उम्र भर कोई गुनाह न किया—न किसी इनसान के ख़िलाफ़ न ख़ुदा के ख़िलाफ़। उन्होंने कभी भी हक़ तआला का कोई हुक्म न तोड़ा—न ख़यालन न फेलन। उन्होंने जो कुछ फ़रमाया या किया वह बर-हक़ और दुरुस्त था। उन में न कोई मक्रो-फ़रेब और झूट था और न ही रियाकारी। उनके क़ौलो-फ़ेल में बिलकुल तज़ाद न था। वह जो कुछ फ़रमाते थे वही करते थे। उन्हें दूसरों की अशया का कोई लालच न था। इनसान की ख़िदमत के मुआवज़े में वह किसी क़िस्म के तोह्फ़े-तहायफ़ या उजरत न लेते थे। उनकी ज़िंदगी सरापा पाकीज़गी थी, क्योंकि वह तमाम ख़वातीन से बहनों का-सा और तमाम मर्दों से भाइयों का-सा सुलूक करते थे। उन्होंने अपने दुश्मनों से इंतक़ाम न लिया बल्कि दुआ की कि अल्लाह उन्हें माफ़ करे। चूँकि वह सरतापा पाकीज़ा और रास्तबाज़ थे इसलिए उन्हें हर तरह की बुराई से नफ़रत थी। जो झूट और रियाकारी से

प्यार करते थे उन्हें वह सख़्ती से डाँटते थे। हुज़ूर अल-मसीह नूर थे, और उन में ज़र्रा भर तारीकी न थी। इसी वजह से वह अल्लाह तआला की पाकीज़गी को इनसान पर ज़ाहिर कर सकते थे। जब हम उनकी पाकीज़ा ज़िंदगी पर निगाह डालते हैं तो हमें एहसास होता है कि वह फ़िलहक़ीक़त अल्लाह का मज़हर हैं। ग़रज़ हम उनकी मारिफ़त बेहतर तौर पर जान सकते हैं कि अल्लाह तआला कितना पाक और क़ुद्दूस है।

अल-मसीह में अल्लाह की मुहब्बत और फ़िकरमंदी का इज़हार

ईसा मसीह की ज़ात में हमें इनसान के लिए हक़ तआला की मुहब्बत और फ़िकरमंदी नज़र आती है। जब हम सितारों पर निगाह करके इस बात पर ग़ौर करते हैं कि काइनात कितनी वसीओ-अज़ीम है, तो हमें क़दरे अंदाज़ा होता है कि अल्लाह तआला कितना अज़ीम और क़ादिर है। फिर ख़ुदा की अज़मत के पेशे-नज़र हमें यह ख़याल आता है कि “क्या क़ादिरे-मुतलक़ जिसने लाखों-करोड़ों सितारे बनाए हैं और उन्हें अपनी अपनी जगह पर थामे हुए है, मुझ नाचीज़ की फ़िकर करता है और मेरी दुआएँ सुनता है? क्या अल्लाह तआला इस दुनिया के करोड़ों

इनसानों के हालात की फ़रदन फ़रदन ख़बरगीरी करता है? वह तो इनसान की छोटी छोटी बातों से कहीं बुलंदो-बाला है।"

इंजील जलील फ़रमाती है कि अल्लाह तआला ने काइनात को अपने कलाम के वसीले से पैदा किया। कलाम इनसान बनकर हमारे दरमियान सुकूनतपज़ीर हुआ। उसका नाम ईसा मसीह है।[1] हुज़ूर अल-मसीह के वसीले से तमाम दुनिया पैदा हुई। तो उनका इनसान से क्या सुलूक था? क्या उन्हें अवाम के रंजो-ग़म और ख़ुशीओ-शादमानी की परवा थी? ज़रूर थी!

अल-मसीह जिस किसी से भी मिले, उससे उन्हें मुहब्बत और हमदर्दी थी। वह हर एक को सेहत, ख़ुशी और नजात अता करना चाहते थे। एक शाम वह एक आलिम के सवालात के जवाब देते हुए बहुत देर तक गुफ़्तगू करते रहे। इस तरह उन्होंने एक दिन एक कुएँ पर एक औरत से बातचीत करके उसे बताया कि ख़ुदा की परस्तिश कैसे करनी चाहिए, और हमेशा की ज़िंदगी कैसे मिल सकती है। जब एक कोढ़ी उनके पास आया तो उन्होंने उसे छूकर तनदुरुस्त कर दिया। वह एक अंधे को गाँव से बाहर ले जाकर उसकी आँखों को छुआ तो वह ठीक हो गईं। जब एक आदमी की बेटी बिस्तरे-मर्ग पर थी और बाप ने शिफ़ा की इल्तिजा की तो वह फ़ौरन उसके घर गए और लड़की को ज़िंदा कर दिया। लोग

[1] इंजील मुक़द्दस, यूहन्ना 1:1-18

हज़रत ईसा के पास हज़ारों की तादाद में आते थे। उन में अमीर-ग़रीब, बुड्ढे-जवान, मर्दो-ज़न, उनके अपने और गैर सब ही होते थे। लेकिन उन्होंने किसी को कभी भी न धुतकारा। उनका अपना फ़रमान है,

> जो भी मेरे पास आएगा उसे मैं हरगिज़ निकाल न दूँगा। (इंजीले-मुक़द्दस, यूहन्ना 6:37)

लोगों के लिए ईसा मसीह की यह हैरतअंगेज़ मुहब्बत अल्लाह की मुहब्बत का इज़हार है। जब ईसा मसीह बीमारों को शिफ़ा देते थे तो उन्हें हक़ीक़त में ख़ुदा ही से सेहतो-शिफ़ा मिलती थी। जब हुज़ूर अल-मसीह बच्चों को अपनी गोद में लेकर बरकत देते थे तो असल में ख़ुदा ही कमज़ोरों और बेबसों के साथ प्यार का इज़हार करता था। ख़ुदा यक़ीनन इनसानों की फ़िकर करता है। जैसे अल-मसीह इनसानों से प्यार करता है वैसे ही अल्लाह तआला इनसानों से प्यार करता है, क्योंकि अल-मसीह अनदेखे ख़ुदा का मज़हर है।

अल-मसीह में गुनाहगार से अल्लाह की मुहब्बत का इज़हार

ईसा मसीह में अल्लाह की गुनाहगार से भी मुहब्बत नज़र आती है। हम अकसर समझते हैं कि अल्लाह गुनाहगारों से भी नफ़रत करता है, कि वह उन्हें बरबाद कर देगा। और चूँकि हम सब गुनाहगार हैं तो शायद हम यह ख़याल भी करते हैं कि पाक ख़ुदा हमारा दुश्मन है। नतीजे में हम उससे सख़्त ख़ौफ़ खाते हैं।

लेकिन जब हम देखते हैं कि अल्लाह के कामिल मज़हर अल-मसीह गुनाहगारों से क्या सुलूक करते थे तो हम हक्का-बक्का रह जाते हैं। नुकताचीनी, नफ़रत और गुरेज़ करने के बजाए हुज़ूर अल-मसीह अकसर औक़ात गुनाहगारों के घरों में जाते, उनके साथ खाते-पीते और उन पर रहमो-शफ़क़त के दरवाज़े खोल देते थे। यह देखकर दीनी राहनुमा हिक़ारत से उन्हें "गुनाहगारों का दोस्त" कहा करते थे। लेकिन मसीह की नज़र में हर गुनाहगार बीमार है, और उसे डाक्टर की ज़रूरत है। इसी वजह से वह उनसे मिलते रहते थे। डाक्टर का मक़सद मरीज़ को मारना नहीं बल्कि बचाना होता है। बिलकुल इसी तरह अल्लाह तआला गुनाहगारों को हलाक नहीं करना चाहता बल्कि उन्हें बचाना चाहता है। इसी वजह से अल्लाह इनसान को अपनी मुहब्बत दिखाने के लिए

हज़रत ईसा में होकर दुनिया में आया। वह उनको जो गुमराह हो चुके थे और गुनाह में मर रहे थे ढूँडने और बचाने आया।

एक मरतबा एक ज़िनाकार औरत को पकड़कर हज़रत ईसा के पास लाया गया। उन्होंने क्या कहा? उन्होंने उस पर फ़तवा न लगाया बल्कि कहा कि "जा, आइंदा गुनाह न करना।" इस में भी हक़ तआला की गुनाहगार से मुहब्बत का इज़हार हुआ। और जब हज़रत ईसा टैक्स लेनेवाले अफ़सर ज़क्काई के घर गए और उन्हें पैसों के लालच से नजात दी तो हक़ीक़त में ख़ुदा ही उस गुनाहगार के घर में गया। इसी तरह जब मसीह ने मरते दम सलीब पर लटके हुए डाकू से नजात का वादा किया तो यह भी ख़ुदा की गुनाहगारों से मुहब्बत का इज़हार था।

अल्लाह की गुनाहगार से मुहब्बत इस में उरूज पर आई कि अल-मसीह ने उनकी ख़ातिर अपनी जान दी। उन्होंने ख़ुद फ़रमाया कि

> इससे बड़ी मुहब्बत है नहीं कि कोई अपने दोस्तों के लिए अपनी जान दे दे।
> (इंजीले-मुक़द्दस, यूहन्ना 15:13)

मसीह को मरने के लिए मजबूर नहीं किया गया था और न ही दुश्मनों ने उन पर ग़लबा पाया था। हक़ीक़त यह है कि उन्होंने अपनी ख़ुशी से अपनी जान क़ुरबान कर दी। अगर वह महज़

इनसान या सिर्फ़ नबी होते तो गो उनकी क़ुरबानी हमें हैरतज़दा तो कर देती ताहम वह इनसान के गुनाहों का कफ़्फ़ारा न हो सकती। लेकिन हुज़ूर अल-मसीह इब्ने-ख़ुदा थे। उनकी क़ुरबानी आम इनसान की क़ुरबानी न थी बल्कि ऐसी हस्ती की क़ुरबानी जिसकी क़दरो-क़ीमत तमाम काइनात से कहीं ज़्यादा थी। हुज़ूर अल-मसीह का दुख हक़ीक़त में अल्लाह तआला का दुख था। जो मुहब्बत उन्होंने अपनी जान देकर ज़ाहिर की वह ख़ुदा की मुहब्बत थी। मसीह की सलीबी मौत से यह अंदाज़ा लगाया जा सकता है कि अल्लाह हम गुनाहगारों से किस क़दर प्यार करता है। अल्लाह की कामिल मुहब्बत मसीह की सलीबी मौत में नज़र आती है। इंजील जलील में इस हक़ीक़त को इन अलफ़ाज़ में बयान किया गया है,

> अल्लाह ने दुनिया से इतनी मुहब्बत रखी कि उसने अपने इक्लौते फ़रज़ंद को बख़्श दिया, ताकि जो भी उस पर ईमान लाए हलाक न हो बल्कि अबदी ज़िंदगी पाए। (इंजील मुक़द्दस, यूहन्ना 3:16)

अल-मसीह में अल्लाह की ज़िंदगीबख़्श ताक़त का इज़हार

आख़री बात यह कि ईसा मसीह में अल्लाह की ज़िंदगीबख़्श ताक़त नज़र आती है। इंजील जलील गवाही देती है कि मसलूब होने के बाद अल-मसीह क़ब्र में न रहे बल्कि तीन दिन के बाद मुर्दों में से जी उठे। अरबों इनसानों में से जो इस दुनिया में आए और चले गए, मसीह वाहिद हस्ती हैं जो मरकर जी उठे और फिर कभी नहीं मरने के। उनकी क़ियामत उनके इस दावे का इलाही सबूत है कि वह इब्ने-ख़ुदा हैं। और जिस इलाही क़ुव्वत ने हज़रत ईसा को मुर्दों में से ज़िंदा किया वह क़ियामत के रोज़ मसीह पर ईमान लानेवालों को अबदी ज़िंदगी अता करेगी। जिस तरह मसीह की सलीब अल्लाह की मुहब्बत का इज़हार है, उसी तरह मसीह की क़ियामत अल्लाह की ज़िंदगीबख़्श ताक़त को ज़ाहिर करती है। यह हमें यक़ीन दिलाती है कि मौत हम पर ग़लबा हासिल नहीं कर सकेगी।

दावत

ग़रज़ हम इरफ़ाने-इलाही कैसे हासिल करें? अल्लाह तआला ने मसीह ईसा में अपने आपको हम पर कामिल तौर पर ज़ाहिर किया है। अब खुली दावत है कि सब अपने आपको अल-मसीह के सुपुर्द करके अल्लाह तआला के हुज़ूर आएँ। हुज़ूर अल-मसीह ख़ुद फ़रमाते हैं,

> राह और हक़ और ज़िंदगी मैं हूँ। कोई मेरे वसीले के बग़ैर बाप के पास नहीं आ सकता। ...जिसने मुझे देखा उसने बाप को देखा है।
> (इंजीले-मुक़द्दस, यूहन्ना 14:6,9)

हुज़ूर अल-मसीह तमाम जहान के लोगों को दावत देते हैं कि उनके क़दमों में आएँ और अल्लाह तआला को रूबरू देखें। अगर आप फ़िलहक़ीक़त हक़ तआला की पहचान हासिल करना चाहते हैं, तो ईसा मसीह की दावत को क़बूल करें और उस पर ईमान लाएँ।